

1. उपाधि (von धा, दधाति mit उप) m. 1) *Betrag* H. an. 3, 343. MED. dh. 29. कृते चतुष्पातसकलो निर्व्याजोपाधिवर्जितः MBh. 3, 13017. उपाधिर्न मया कर्मा वनवासं जुगुप्सितः R. 2, 141, 29. — 2) *nähere Bestimmung, Attribut; Bedingung* TRIK. 3, 3, 215. 216. H. an. MED. dh. 30. PAT. zu P. 7, 2, 15. गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधयः परमाग्निः (richten sich nach dem Geschlecht des Hauptworts) AK. 3, 6, 44. SĀH. D. 10, 18. 21, 19. COLEBR. Misc. Ess. I, 287. BHĀSHAP. 46. 137. fgg. Z. d. d. m. G. VI, 12. 16, N. 2. VII, 299. उपाधिकं am Ende eines adj. comp. Sch. zu P. 4, 2, 24. 67. 5, 1, 16. SĀH. D. 22, 1, 2. VOP. 25, 17. Z. d. d. m. G. VII, 291, N. 4. तत्र चेदुपाधिमात्रायां (in irgend einem bestimmbaren Maasse, d. i. in dem allergeringsten Maasse) नखेन लवणस्य कुर्यान्नैवाप्त्य तद्व्याप्तं संप्रत्यक्षे KAUC. 68. अनुपाधिर्मणयो देश एषः unbedingt reizend PRAB. 101, 11 (Sch.: = सकृन्मुद्र). उपाधि = नामचिह्न Beiname ÇABDAR. im ÇKDR. — Vgl. उपधा, उपधि.

2. उपाधि (von ध्या, ध्यायति mit उप + घ्रा) m. 1) *das Nachdenken über das Recht* (धर्मचिन्ता) AK. 1, 1, 2, 28. H. 1381. an. MED. — 2) ein für den Unterhalt der Familie besorgter Mann AK. 3, 1, 12. H. 478. an. MED. — Vgl. 2. घ्राधि.

उपाधिक (उप + अधिक) adj. überzählig RV. PRĀT. 15, 15. — Vgl. u. 1. उपाधि 2.

उपाध्याय (von 3. इ mit उप + घ्राधि) 1) m. Lehrer P. 3, 3, 21, Sch. VOP. 26, 170. AK. 2, 7, 6. H. 78. उपाध्यायाय भैतं प्रयच्छति KAUC. 10. 141. स गुरुर्यः क्रियाः कृत्वा वेदमस्मै प्रयच्छति । उपनोय ददद्देमाचार्यः स उदाहृतः ॥ एकदेशमुपाध्यायः JĀṢṆ. 1, 35. उपाध्यायान्दशाचार्यः (गौरवेणातिरिच्यते) M. 2, 145. 3, 91. MBh. 14, 2629. VIÇV. 11, 9. SUÇR. 1, 71, 12. ÇĀK. 61, 11. 64, 12. अश्वः सोपाध्यायः mit einem Bereiter R. 1, 11, 13. — 2) f. oया Lehrerin P. 3, 3, 21, VĀRTT. 1. 4, 1, 49, VĀRTT. 4. AK. 2, 6, 4, 14. H. 524. — 3) f. ोयी Lehrerin und Frau eines Lehrers P. 3, 3, 21, VĀRTT. 1. VOP. 4, 24. AK. 2, 6, 4, 14. 15. H. 523. 524. Vgl. उपाध्यायानी.

उपाध्यायानी (von उपाध्याय) f. Frau eines Lehrers P. 4, 1, 49, VĀRTT. 4. VOP. 4, 24. AK. 2, 6, 4, 15. H. 523. MBh. 1, 750. 758. 759.

उपानसं (von उप + घनसन्) 1) adj. auf dem Wagen befindlich: सचायोरिन्द्रश्चर्कष आ उपानसः संपर्पन् । नद्योर्विचित्रतयोः प्रूर इन्द्रः RV. 10, 103, 4. — 2) n. der Raum auf dem Wagen oder das auf den Wagen Geladene P. 5, 4, 94, Sch. (जाति). VOP. 6, 45. निर्वो गोष्ठद्वानामसि निरुन्ना-निर्हपानसात् AV. 2, 14, 2.

उपानस (von नस् mit उप mit Dehnung des Auslauts) P. 6, 3, 116. f. (nom. उपानस P. 8, 2, 34). VOP. 6, 62. Sandale, Schuh AK. 2, 10, 31. H. 914. काष्ठी उपानसा उपमुञ्चते TS. 5, 4, 4, 4. 6, 6, 1. वाराक्षा उपानसा (vgl. P. 6, 1, 106, Sch.) ÇAT. BR. 5, 4, 3, 19. 5, 3, 7. उपानस्युग ĀÇV. GRHJ. 3, 8. दामनी द्वे उपानसौ च कर्णिन्यौ कृते स्यातामित्येके KĪTJ. ÇA. 22, 4, 21. उपानसश्चधारणम् M. 2, 178. 246. 4, 66. 74. MBh. 2, 1915. Hit. I, 133. पाण्डकोपनसो चापि युगमानि R. 2, 91, 69. am Ende eines adj. comp. उपानसकं gaṇa उरग्रादि zu P. 5, 4, 151. सोपानसक M. 3, 238 (vgl. अनुपानसक). am Ende eines adv. comp. उपानसं gaṇa शरदादि zu P. 5, 4, 107. VOP. 6, 62. दृष्टोपानसं (nom.) दृष्टिणा ÇĀK. GRHJ. 3, 3, 7.

उपानुवाक्य (उप + अनुवाक्य oder अनुवाक्या) 1) adj. Beiwort A gni's TAHT. ĀR. 1, 22, 11. — 2) n. Bez. eines Abschn. der TS. Ind. St. 3, 381. 389.

1. उपात्ति (उप + घृत्ति) n. 1) *Nähe des Endes; Saum, Rand*: उपात्ते in der Nähe des Endes TS. 6, 6, 4, 3. तीरोपात्ते न्यविशत् PAÑKĀT. 203, 8. मे-रोरुपात्तेषु RAGH. 7, 21. 47. 16, 21. दिशमुपात्तेषु सप्तर्ष दृष्टिम् KUMĀRAS. 3, 69. MEGH. 18. 28. AMAR. 23. KATH'S. 24, 136. PRAB. 73, 8. उपात्तसंमी-लितलोचन (daher vielleicht bei WILSON: the angle of the eye) RAGH. 3, 26. उपात्तभागेषु KUMĀRAS. 7, 32. am Ende eines adj. comp. f. आ ÇĀN-THIÇ. 2, 16. — 2) *unmittelbare Nähe* H. 1450. नगरोपात्ते Hit. 91, 15. MEGH. 78. तस्य चोपात्तसंन्यस्ते शयानो शयने R. 5, 14, 29. उपात्तस्थित RAGH. 3, 57. MEGH. 73. यौगंधरायणोपात्तम् (zu Jaug.) — विसर्ग च । स हूतम् KA-TH'S. 16, 4. ये च ते ऽनुचराः पदोपात्तं सनाश्रिताः MBh. 3, 198. — 3) der vorletzte Buchstab AK. 3, 6, 14.

2. उपात्त (wie eben) adj. gegen das Ende hin befindlich, der vorletzte; vom Finger ÇIKSHĀ 43. — Vgl. उपात्त्य.

उपात्तिक (उप + घृत्) n. *Nähe*: आनीयेत — ममोपात्तिकम् zu mir VIKR. 56. पञ्च वीरे न पश्यामि धनंजयमुपात्तिकात् in der Nähe, bei mir MBh. 3, 10873. उपावृत्तमुपात्तिकात् R. 4, 39, 14. तस्माद्विश्रब्धो मम कर्णो-पात्तिके स्फुटं निवेद्यतम् PAÑKĀT. 167, 13.

उपात्त्य (उप + घृत्) adj. der vorletzte P. 5, 4, 90, Sch. ÇAUT. 16. 33.

उपाप (von आप् mit उप) in ड्रुपौप schwer zu erlangen ÇAT. BR. 10, 1, 2, 6.

उपाप्ति (wie eben) f. *Erreichung, Erlangung*: कैतेषामुपाप्तिः ÇAT. BR. 10, 1, 2, 6. 6, 2, 4, 35. 2, 13. 3, 4, 1. 6, 4, 5. 7, 3, 2, 1.

उपापति (von भू mit उप + घ्रा) f. *das Hinzu-, Herzubringen*: उ-र्नामुपापति (instr.) RV. 4, 128, 2.

उपाप (von 3. इ mit उप) m. 1) *Herbeikunft* MED. j. 73. अहो दुष्टः का-यस्तदपि मरणोपापचकितः BHART. 3, 10. — 2) *wodurch man zu seinem Ziel gelangt, Mittel, Weg, fein angelegtes Mittel, List* AK. 3, 4, 3, 23. 23, 142. MUNP. UP. 3, 2, 4. सर्वोपायैस्तथा कुर्यान्नोतिष्ठः पृथिवीपतिः । यथा-स्याभ्यधिका न स्युर्मित्रोदासीनशत्रवः ॥ M. 7, 177. 8, 48. 190. 9, 312. 11, 112. BHAG. 6, 36. N. 26, 9. VIÇV. 13, 27. R. 1, 8, 15. 9, 1, 8. AMAR. 21. KA-TH'S. 20, 2. 25, 32. BURN. Lot. de la b. l. 549. fg. उपायेन हि तत्कुर्याद्यत्र शत्रवं पराक्रमैः PAÑKĀT. I, 233. उपायो विहितश्चायं वदर्थमनुतो ऽनया N. 24, 33. अयमुपायश्चित्तिता महान् 19, 4. उपायो ऽयं मया दृष्टो निरपायः 4, 19. उपायमनपायम् R. 3, 44, 8. सर्वोपायमकः PAÑKĀT. I, 10. चित्तयित्वा च तस्योपायान्वहंस्ततः Mittel dieses in's Werk zu setzen R. 1, 8, 21. नान्यो ऽस्ति कश्चिदुपायो ऽस्माकं जीवितस्य PAÑKĀT. 161, 9. कं करिष्यत्युपायम् R. 5, 6, 3. वधार्थं तस्य भगवन्पायं कर्तुमर्हसि 1, 14, 19. मया तावदेतेषां वधोपायायश्चित्तनीयः PAÑKĀT. 191, 9. उपायो ऽयं मया दृष्टो नैयधानयने तव N. 24, 24. सर्वोपायं च वर्तित्ये विनिवर्तयितुं वनात् R. 2, 82, 18. एतैरुपा-ययोगैः M. 9, 10. संपुक्तान्वियुक्ताश्च सर्वोपायान्मूढदुष्टः 7, 214. भेदा द्वाष्टः साम दानमित्युपायचतुष्टयम् (den Feind zu bezwingen) AK. 2, 8, 4, 20. H. 736. MED. j. 73. M. 7, 108. 109. 200. JĀṢṆ. 1, 345. कश्चिद्वाङ्गुणैः पट्टिभः सतो-पायैस्तयानव (die 4 eben erwähnten und die 3 sogenannten नुद्वापायाः; s. H. 738) ॥ क्तावलेन सम्यक् चतुर्दश परितसे MBh. 2, 135. in comp. mit dem Ziel: वृत्त्युपायान् M. 10, 2. कृत्वायं विहितस्तस्य वधोपायः R. 1, 14, 20. PAÑKĀT. 3, 3, 6. आहृणोपाय सुÇR. 1, 23, 13. साधनोपाय 2, 46, 14. सर्वोपायाश्चित्तनीयाः कर्तव्याश्च PAÑKĀT. 6, 7. 92, 3. KATH'S. 10, 43. 138. H. 77. mit dem Mittel selbst: शस्योपाय ĀÇV. ÇR. 9, 10. कन्याश्चित्रैर्वधो-